Prakriti- The International Multidisciplinary Research Journal
Year 2025, Volume-2, Issue-1 (January - June)

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में व्यक्त नारी अवधारणाएं

डॉ.सुनीता सियाल

शोध सारांश –

कृष्णा सोबती ने अपने उपन्यास 'डार से बिछुड़ी','मित्रों मरजानी','सूरजमुखी अंधेरे के' में स्त्री को जिस उन्मुक्त रूप में प्रस्तुत किया है,यही उनकी बहुत बड़ी देन है| नारी को जिस साहस के साथ प्रस्तुत कर सकी है,उसके पीछे उनका काम-संबंधों के विषय में नवीन दृष्टिकोण है| उन्होंने काम-भावना को शरीर की एक सहज आवश्यकता मानकर चित्रित किया है| काम-संबंधों के विषय में उनके यह विचार दृष्टव्य है- व्यक्ति की दृष्टि से विवाह एक अनावश्यक बंधन है इससे व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जाता है| विवाह पूर्व और विवाहेत्तर सेक्स संबंधों को उचित-अनुचित के बजाय स्वाभाविक कहना ज्यादा सही है | कोई भी स्त्री-पुरुष यदि स्वेच्छा सेक्स संबंध रखते हैं तो दूसरे को क्या हक है कि वह उन पर टिप्पणी करें या उनके कार्य को अनुचित बताएं | लेखिका की इसी विचरणा ने उनके उपन्यासों को नवीन कथ्य और पात्रों को साहसिकता और मानवीयता प्रदान की है| उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की बदलती धारणाओं व मान्यताओं को सही धरातल पर प्रस्तुत किया है |

संकेत बिंदु – संघर्षों से जूझती नारी, परिवार के कायदे कानून,अतृप्त काम-भावना, नारी का उन्मुक्त रूप, बलात्कार की समस्या, स्त्री-पुरुषों के बदलते संबंध,

उपन्यास साहित्य को समृद्ध बनाने में महिला लेखिकाओं का योगदान सराहनीय रहा है| नारी के अंतस को वाणी देने में उनके उपन्यास सक्षम रहे हैं| इन लेखिकाओं ने नारी में उभर रही नई चेतना और नए व्यक्तित्व और फलतः स्त्री

पुरुष के परस्पर बदलते संबंधों को चित्रित किया है तथा प्रेम और यौन-संबंधों के बदलते स्वरूप को अंकित किया है| व्यक्ति केंद्रित होने के कारण इन उपन्यासों में स्त्री-पुरुषों के संबंधों को दांपत्य जीवन में या दांपत्य जीवन से बाहर या विवाह से पूर्व नए सामाजिक सन्दर्भों में गहराई से देखा गया है| सुरेश सिन्हा का मत है- “उपन्यास का जीवन से संबंध होने के कारण तथा व्यक्ति और समाज के जीवन के मूल में नारी की शक्ति निहित होने के कारण उपन्यासों में नारी का चित्रण न होना असंभव था और असंभव है |”1 आज लेखिकाओं ने नारी को जिस नवीन रूप में चित्रित किया है इसका कारण है सामयिक नारी का अपने व्यक्तित्व के संबंध में बदला हुआ दृष्टिकोण| वह आज श्रृंखलाओं से मुक्त अपने ढंग से जीवन जी रही है और अपने अस्तित्व के आधार पर अपनी प्रवृत्तियों को व्यक्त कर रही है| अब नारी पशुवत जीवन व्यतीत करने वाली पुरुष की व्यक्तिगत संपत्ति और यौन इच्छाओं की पूर्ति का साधन मात्र नहीं रह गई है | अपने परिवर्तित स्वरूप के कारण उपन्यासों में नारी विविध रूपों में चित्रित की गई है| नारी की अपनी सत्ता महत्ता रही है|यदि नारी वर्तमान के साथ भविष्य को भी हाथ में ले ले तो वह अपनी शक्ति से बिजली की तड़प को भी लज्जित कर सकती है| लेखिकाओं द्वारा उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र कहीं सामाजिक नियंत्रण के कारण अवचेतन मन में एकत्रित दमित अतृप्त यौन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आते हैं, कहीं उन्होंने नारी पात्रों के माध्यम से स्वयं अपनी व्यक्तिगत कुंठाओ तथा वर्जनाओं को प्रदर्शित किया है| उपन्यास रचना के पीछे इनका दृष्टिकोण चाहे जो रहा हो,इन लेखिकाओं द्वारा रचित उपन्यास इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि कहीं जा सकती है | महिला कथाकारो के मध्य कृष्णा सोबती अपना विशिष्ट स्थान रखती है| हिंदी कथा साहित्य की बोल्ड एवं बहुचर्चित लेखिकाओं में इनका नाम

लिया जाता है|इन्होंने उपन्यास साहित्य को नवीन दिशा दी है| अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज को जो कुछ दिया है, उसमें वैशिष्ट्य यह है कि उन्होंने उत्कृष्ट शैली को अभिव्यक्ति का आधार बनाया है| इनके उपन्यासों के पात्र अपने आप में एक अनूठापन लेकर अवतरित हुए हैं और कथ्य आकर्षक मौलिकता से समंजित है|

कृष्णा सोबती का 'डार से बिछुड़ी' एक प्रसिद्ध बहुचर्चित उपन्यास है| लेखिका ने इस उपन्यास में एक ऐसी भोली भाली अल्हड़ युवती की मर्मस्पर्शी व्यथा को व्यक्त किया है, जिसे अपनी मां द्वारा की गई भूल का दुष्परिणाम भोगना पड़ा| मां की एक भूल ने पुत्री के संपूर्ण जीवन को विषाक्त बना दिया| उपन्यास को पढ़ते पढ़ते पाठक करुणा प्लावित हो उठता है, उसके मन में एक टीस उठती है, एक दर्द पैदा होता है- इस निरपराध लड़की पाशो के लिए| लेखिका ने इस उपन्यास में नारी मन में स्थित करूण-कोमल भावनाओं, आशा-आकांक्षाओं और उनके नष्ट हो जाने पर हृदय में उठते मर्मान्तक दर्द को चित्रित किया है| उपन्यास की नायिका पाशो की मां ने शेख जाति के व्यक्ति को पति रूप में ग्रहण कर लिया| उसके इस कृत्य से उसके खत्री परिवार के सदस्य रुष्ट हो गए क्योंकि यह उसके परिवार के गौरव पर आघात था| उसके इस कृत्य का फल भोगा उसकी भोली भाली पुत्री पाशो ने| पाशो को अपनी नानी, मामा एवं मामियों के कठोर अनुशासन में रहना पड़ता है| पाशो को खोजो की हवेली की ओर जाने की सख्त मना ही कर दी जाती है| पाशो इस बात से परिचित है कि खोजो की हवेली में उसकी अपनी मां रहती है| विधि की कैसी विडंबना है कि मां के होते हुए भी पाशो मातृविहीना है| एक दिन मामू पाशो से इस घटना की पूछताछ करते हैं कि उसने फतेह अली को रुमाल दिया है, पाशो अपनी ओर से पूर्ण स्पष्टीकरण देती है, पर मामू पाशो को इतनी निर्ममता से पीटते हैं कि वह औंधे मुंह गिर पड़ती है तब नानी आकर बीच बचाव करती है| इन्हीं दिनों पाशो को मामू व नानी द्वारा हत्या के षड्यंत्र का भान हो जाने पर वह भाग कर

खोजो की हवेली पहुंच जाती है| वहां शेखजी उसे सांत्वना देकर दीवानजी के यहां पहुंचा देते हैं| दीवानजी के साथ वह पत्नी रूप में रहने लगती है| पाशो को पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है| कुछ समय बाद दीवानजी चल बसते हैं तब दीवान जी के रिश्ते के भाई बरकत दीवान उसका सतीत्व नष्ट कर लाला के हाथ बेच देते हैं| लाला का मंझला पुत्र पाशो से विशेष प्रेम करता है| इसी समय इधर अंग्रेज-सिख युद्ध प्रारंभ हो जाता है| मंझला पुत्र युद्ध में काम आ जाता है| पाशो फिर निराश्रिता हो जाती है |

इस प्रकार उसके जीवन में बार-बार टूटने वाले यह मुसीबतों के पहाड़ इस कथा को मार्मिक बना देते हैं| निराश्रिता पाशो को मलिक राजाओं का वंशज उसे अपने घर ले आता है, उसे बहन मानता है| दुर्भाग्यवश उसका वीर भी युद्ध में काम आ जाता है| वहां फिरंगी लूटपाट मचाते हैं यहां से पकड़कर पाशो को फिरंगी की कचहरी में हाजिर होने को ले जाया जाता है| वहीं से उसका अपना वीर शेखजी का पुत्र उसे पहचानकर पुनः घर ले जाता है| 'डार से बिछुड़ी' पाशो संघर्षों से जूझती फिर डार से आ मिलती है परंतु अब उसकी स्थिति यह है कि क्या वह डार से पुनः लग सकती है? पाशो परिवार रूपी डार से मिलने पर भी डार से बिछुड़ी ही रही| "डार से बिछुड़ी अर्थात सामाजिक वर्जनाओं और परिवार के कायदे कानूनों की गिरफ्त से छूटी नारी|"2 नारी की कही गई वाणी कटु सत्य बनकर रह जाती है कि-' संभल कर री, एक बार थिरका हुआ पाँव जिंदगानी धूल में मिला देगा|'

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में 'मित्रों मरजानी' एक विशिष्ट स्थान रखता है| इस उपन्यास ने हिंदी साहित्य जगत को अपनी ओर आकृष्ट किया है| मित्रों के रूप में लेखिका ने जिस निर्भीक,दृढ़,वाचाल किंतु कोमल नारी चरित्र का निर्माण किया है,वह हिंदी साहित्य में अनूठा है |"वह मात्र मांस-मज्जा से बनी एक नारी है, जिसमें स्नेह भी है, ममता भी, मां बनने की हौंस भी है और एक

अविरलबहती वासना सरिता भी| नारी के पुराने सब बिंबो को चुनौती देती यह 'मित्रों' वास्तव में हिंदी साहित्य इतिहास की एक मणि है|"3

प्रस्तुत उपन्यास में एक संयुक्त पंजाबी परिवार है, जिसमें वृद्ध गुरुदास और धनवंती का भरा पूरा परिवार है| गुरुदास के तीन पुत्र है- बनवारीलाल, सरदारी लाल और गुलजारी लाल और तीन पुत्र वधुएं हैं तथा एक लड़की जनको है, जिसका विवाह कर दिया गया है| गुरुदास बहुओं की मौज मस्ती और उनके व्यवहार से क्रोधित रहते हैं| धनवंती इस तथ्य से परिचित है परंतु वह पुत्रवधुओं के साथ दैनिक कार्यों में व्यस्त रहती है| सरदारीलाल की पत्नी इस उपन्यास की नायिका सुमित्रावंती (मित्रों) है| सरदारीलाल अपनी पत्नी मित्रों की शारीरिक भूख संतुष्ट करने में असमर्थ है| विवाह पूर्व ही उसने जो अपनी माता के कई व्यक्तियों के साथ अनुचित संबंध देखें तो स्वाभाविक रूप से उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव उस पर पड़ता रहा| फलतः दोनों में सामंजस्य नहीं हो पाता |इसी क्षुधाकी पूर्ति मित्रों की मांग है, जिस पर सारा कथानक आधारित है| काम भावना की अभुक्ति मित्रों को वाचाल बना देती है| वह जेठ-जेठानी तथा सास-ससुर तक से पर्दा नहीं करती| संपूर्ण उपन्यास में मित्रों का चरित्र ही छाया रहा है| मित्रों के इस अनूठे चरित्र से ऐसे कथानक की सृष्टि हुई, जो हिंदी साहित्य में अपूर्व है| "सात नदियों की तारु तवे-सी काली मेरी मां और मैं गोरी-चिट्ठी उसकी कोख पड़ी| कहती है इलाके के बडभागी तहसीलदार की मुँहादरा है मित्रों| अब तुम ही बताओ जेठानी तुम जैसा सतबल कहां से पाऊं-लाऊं,देवर

तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता|"4 धनवंती मित्रों के विचित्र व्यवहार से चिंतित हो उहा-पोह में पड़ जाती है| मित्रों को कुछ दिन के लिए सरदारी लाल के साथ पीहर भेज देती है| इसी से क्रोधित मित्रों चहक उठती है क्योंकि वहां उसकी काम भावना को तृप्ति मिलेगी |मित्रों की मां बालों उसकी मन की इच्छा जानकर काम-तृप्ति हेतु प्रबंध करती है| सरदारीलाल को शराब पिलाई जाती है| उसके नशे में डूब जाने पर मित्रों को ले बालों चल पड़ती है परंतु मित्रों जैसे ही

भीतर जाने को तत्पर हुई बालों ने उसे पुकार लिया| मित्रों को यकायक मां की आंखों में अद्भुत प्यास और गहरी चमक दिख पड़ती है, तो उसका पत्नी रूप स्त्री रूप पर हावी हो उठता है |वह दौड़कर सरदारी लाल के कमरे में जाकर दरवाजा बंद कर लेती है| काम-संबंधों के विषय में यह विचार दृष्टव्य है- "व्यक्ति की दृष्टि से विवाह एक अनावश्यक बंधन है इससे व्यक्तित्व का विकास अवरुद्ध हो जाता है| विवाह पूर्व और विवाहेत्तर सेक्स संबंधों को उचित-अनुचित के बजाय स्वाभाविक कहना ज्यादा सही है|"5

इस प्रकार मित्रों 'समर्पिता' व 'गृहीता' दोनों है परंतु अंत में जाते-जाते उसकी वह समर्पण भावना प्रबल हो जाती है| इसे कृष्णाजी की 'बोल्डनेस' पर भारतीय संस्कारों एवं परंपराओं की विजय ही मानना चाहिए । मात्र बुराई को दिखाना ही इस उपन्यास का उद्देश्य नहीं है,इसीलिए मित्रों की वासना को अंत में श्रद्धा का सहारा दिया है।

'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास में लेखिका ने बलात्कार के बाद जड़ हो जाने वाली नारी की व्यथा पूर्ण कहानी कही है। इस उपन्यास में एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके 'फटे' बचपन ने उसके सहज भोलेपन को असमय चाक कर दिया और उसके तन-मन के गिर्द दुश्मनी की कंटीली बाढ़ खींच दी । इस उपन्यास की नायिका रत्ती है, जिसके कटु अनुभवों की कथा इसमें है। इस घटना से परिचित होने के कारण उसके सहपाठी उसे चिढ़ा चिढ़ाकर अपमानित करते हैं ।वह उस स्थिति को सहन नहीं कर पाती और क्रोधित हो सबको पीटती है । प्रारंभ में तो वह इस स्थिति का विरोध करती है परंतु धीरे-धीरे उत्तेजना हीन होकर दैहिक सुख भोग के प्रति जड़ हो जाती है । एक जटिल मनोग्रंथि उसे बांध लेती है । रत्ती के जीवन की यह दर्द भरी दास्तां तीन खंडो में विभाजित है । पुल, सुरंगे और आकाश । नायिका के जीवन का चित्रण लेखिका ने पूर्व दीप्ति शैली में किया है ।

'पुल' खंड में केशी, रीमा और कुमू के साथ रहते हुए रत्ती की व्यथा में प्यास ,दर्द, वीरानी और उखड़ापन व्यक्त हुआ है। इन सब के साथ रहते हुए रत्ती एकाकी है, वह ऐसी लड़की है जिसने कभी किसी को नहीं पाया और जिसको कभी किसी ने नहीं । केशी उसे समझाता है हमेशा अपने से अपने अंदर लड़ते रहने का कोई फायदा नहीं लड़ाई को बाहर रख लड़ना हमेशा अच्छा है । परंतु रत्ती की ट्रेजेडी यह है कि वह चाह कर भी अपनी इस आंतरिक लड़ाई को बाहर नहीं मोड़ पाती । अपने को वह ऐसी सड़क से उपमित करती है "जिस सड़क का कोई किनारा नहीं रत्ती वही है ।वह आप ही अपनी सड़क का डेड एंड है । आखिरी छोर है ।"6 परिस्थितियों ने रत्ती को उस गीली लकड़ी के समान बना दिया जो जलेगी तो धुआं ही देगी। रत्ती ने इस व्यथा भरी यात्रा को 'पुल' खंड में लांघा है| इस यात्रा को पार करने में रीमा, केशी और कुमू 'पुल' सदृश है|

'सुरंगे' खंड में रत्ती द्वारा सही गई असहनीय व्यथा का चित्रण है| रत्ती के जीवन में अनेक पुरुष आए,जो उसके साथ शारीरिक सुख भोगना चाहते थे परंतु उनमें से कोई भी उसके अंतर मन को नहीं पहचान सका|

'आकाश' खंड में रत्ती के जीवन को मोड मिला है| अब तक उसमें जो अतृप्त प्यास थी उसे तृप्ति मिली है| रत्ती की जड़ता दिवाकर के संसर्ग से टूटती है, परंतु दिवाकर के द्वारा प्राप्त हुए सुख भी उसे सूरजमुखी को अंधकार और उलझन के घेरे से बाहर नहीं कर सका | इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यासों की कथा संघर्षों से जूझती नारी, परिवार के कायदे कानून, अतृप्त काम-भावना,बलात्कार की समस्या, स्त्री-पुरुषों के बदलते संबंधों पर अवलंबित है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हिन्दी उपन्यासों में नारी की परिकल्पना- डॉ.सुरेश सिन्हा, पृष्ठ-44

2. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य एवं नारी समस्याएं- डॉ.शहेनाज ज़ाफर बासमेह, पृष्ठ 172
3. मित्रों मरजानी- कृष्णा सोबती, परिचय
4. मित्रों मरजानी - कृष्णा सोबती, पृ. 20
5. -काम संबंधों का यथार्थ चित्रण और समकालीन हिंदी कहानी-डॉ.वीरेंद्र सक्सेना, पृ, 285
6. 'सूरजमुखी अंधेरे के'- कृष्णा सोबती, पृ.21

डॉ.सुनीता सियाल

एसोसिएट प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्षा

सोफिया गर्ल्स कॉलेज (स्वायत्तशासी), अजमेर

मो.न .9460478865

ई मेल- sunitaheeranshi1@gmail.com